

কবিতা তসলিমা--

[তসলিমা ভারতের প্রতি অভিমानी হয়ে
लिखेছেন-"भारत वर्षेर् उपहार' कबिताटि
<http://taslimanasrin.com/bbondini.pdf>
(शेष कबिता)। तार उतरे एइ कबिता।]

तसलिमा

हिउयेंग सांग एलेन-सेटा सन ७७०
तसलिमा एलेन लज्जा पाये शताब्दि शुरुर् किछु आगे
अतिथि सङ्कारेर् हिमालय एतिथे
कापालिक सर्दार हियेंग साङ्के चडालेन बलिकाठे
भारतपरिव्राजक प्राञ्ज शान्त समाहित
"हे बुद्ध, आमार आत्माहुतिते पूर्ण होक एदेर् मनोबिलास--"
सेदिन सन ७७०-कापालिक सर्दार बुबोहिलेन बलिर् रङ्गे भरे शुधु ब्राञ्जिकलस
एटा सन २००८-
प्राञ्ज परराष्ट्रमन्त्री बोबेन तसलिमार बलिर् रङ्गे उपछे उठवे भोटकलस।

शिम्पाजी, हनुमान- आज ओदेर् जिराफमुख ऋमतार सबुज पाताय
आमरा 'भालो आछि' घासे नाक घसे महान भारतर् दिबानिद्राय!

मानुष के चाई?
ना मानुषे, ना नेतारा।
ना भारत्तार शबे काँध देओया प्रतिबिबर्तनेर् मोल्लारा।
ना मनुवादि ठिकानाररा।
सम्पूर्ण भारतवर्ष २००८।